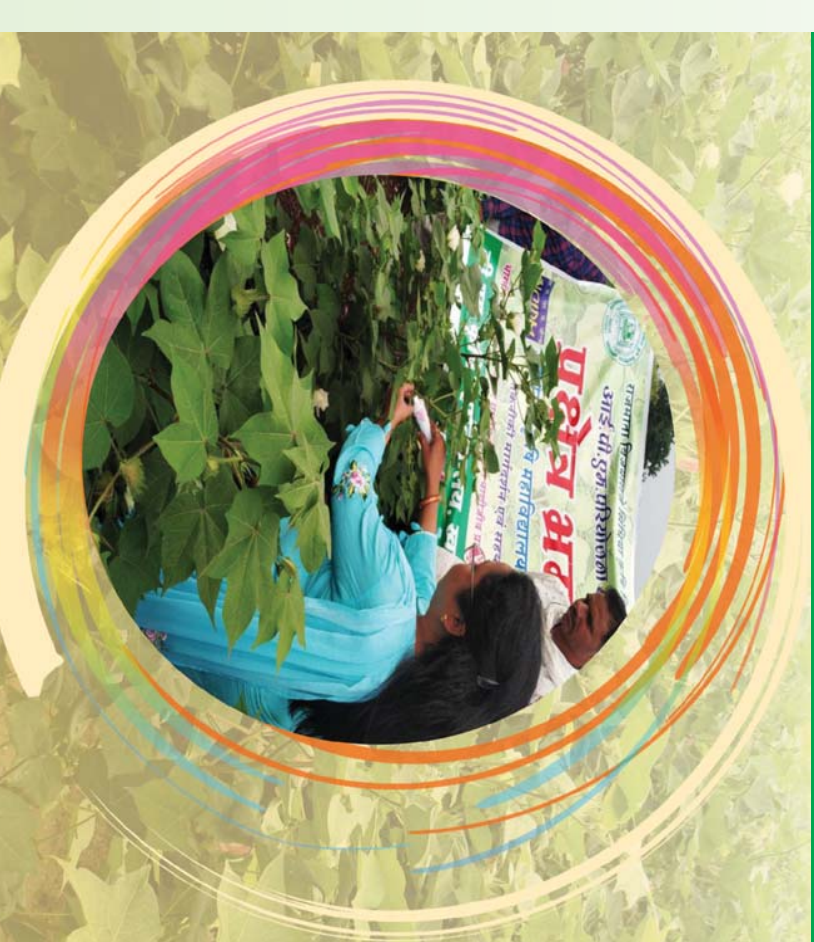






NCIPDM

# स्पलेट तकनीक (SPLAT) द्वारा कपास में गुलाबी सुंड़ी का प्रबंधन



अनंता विराह, सतीरा परसाई\*, लिकल आचार्य, ऋषि कुमार\*, एस पी सिंह,

अनूप कुमार, मुकेश कुमार खोबर, नीलम मेहता एवं सुभाष चन्द्र

\*कृषि महविद्यालय, अजमेर, जयपुर, भारत  
\*भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, गानपुर, महाराष्ट्र

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबन्धन अनुसंधान केन्द्र  
पूसा परिसर, नई दिल्ली-110012

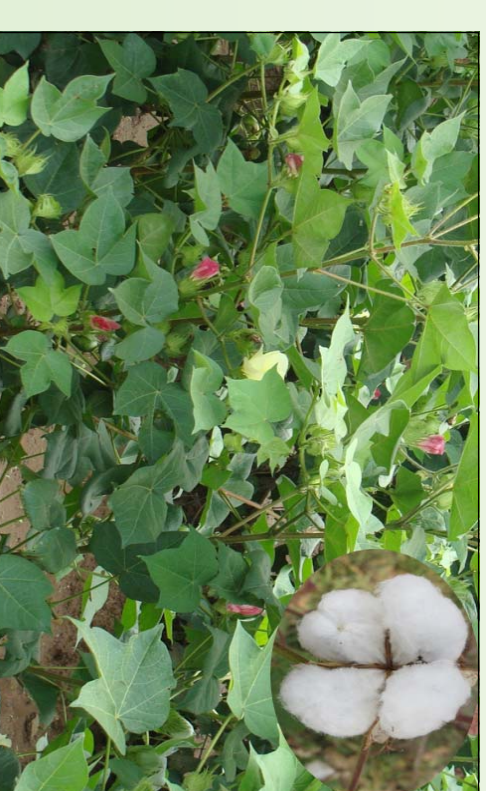
## क्या न करें

- ❖ लम्बी अवधि की देर से पकने वाली शंकर व देशी किस्मों का चयन न करें
- ❖ उत्तरी क्षेत्र में देर से बुवाई (15 मई के पश्चात) न करें एवं मध्य भारत में 31 मई से पहले बुवाई न करें
- ❖ यूरिया उर्वरक का अंधाधुंध प्रयोग न करें
- ❖ सिंथेटिक पग्रिथोइड कीटनाशियों का प्रयोग न करें
- ❖ खेत के पास कपास के अवशेषों के ढेर इकट्ठा न करें
- ❖ खेत में जलभराव न होने दें।



संकेत दिया। कपास में कीट प्रबंधन के गैर-रासायनिक तरीके रासायनिक कीटनाशकों के भार और सुरक्षा की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वर्ष 2022 के खरीफ कपास सीजन से राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के खंडवा, मध्य प्रदेश स्थित कृषि महा विद्यालय व भा.कृ.अनु.प.- भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के सहयोग से भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसन्धान केन्द्र, नई दिल्ली की कपास टीम द्वारा 50 एकड़ क्षेत्र में प्रदर्शन किया जा रहा है। इसके अलावा केंद्र द्वारा भा.कृ.अनु.प.- भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के सहयोग से आईपीएम कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम भैनीचंदपार्ल, रोहतक, हरियाणा में 50 एकड़ क्षेत्र में इस तकनीकी का सत्यापन किया गया है। वर्तमान कीट नियंत्रण उपकरणों के साथ प्रबंधन कठिनाइयों के कारण पीबीडब्ल्यू के खतरे को रोकने के लिए यह तकनीक रासायनिक कीटनाशकों को कम करने का हेतु एक वैकल्पिक तरीका है। कपास में समेकित नाशीजीव प्रबंधन मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण की सुरक्षा के साथ नाशीजीवों द्वारा होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम करता है।



कर्णाटक में हुए एक अध्ययन में गुलाबी सुंड़ी (पीबीडब्ल्यू) के व्यवहार को बदलने वाले एक गैर-रासायनिक तरीके का उपयोग किया गया था और मौजूदा प्रबंधन रणनीतियों की तुलना में इसकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया था (श्रीनिवास व टीम, 2021)। गुलाबी सुंड़ी (स्प्लेट-पीबीडब्ल्यू) के लिए विशेष फेरोमोन और ल्यूर एलिकेशन तकनीक का उपयोग करके मोटिंग व्यवधान प्रौद्योगिकी के साथ एक क्षेत्र-व्यापी प्रबंधन परीक्षण किया गया था। भारत के कर्नाटक के रायचूर जिले में 2017-18 के दौरान 154 एकड़ और 2018-19 के दौरान 206 एकड़ में 500, 750, और 1250 ग्राम/एकड़ स्पलेट के प्रयोग ने पीबीडब्ल्यू का महत्वपूर्ण नियंत्रण दर्ज किया। परिणामों से पता चला कि 500 ग्राम/एकड़ स्पलेट सबसे अच्छा पाया गया, क्योंकि न्यूनतम रोसेट फूल (8.23%), हरे टिंडे की क्षति (7.36%) और उच्च उपज (33.59 क्यू. / हेक्टेयर) किसानों के अभ्यास की तुलना में दर्ज किया गया, जिसने कीटनाशक स्प्रे के 5-6 राउंड के बाद भी 22.33 किबंटल / हेक्टेयर उपज दी। पांचवें सप्ताह के अंत में, फेरोमोन के सक्रिय संघटक का 40.36 प्रतिशत क्षेत्र को नमूने में मौजूद था। इसने स्पलेट ल्यूर से फेरोमोन की धीमी गति से रिलीज तंत्र का

प्रकाशक

निदेशक

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसंधान केंद्र

लाल बहादुर शास्त्री भवन, पूसा परिसर, नई दिल्ली -110012

फोन: 011-25843936, 25740951, 25843935 फेक्स: 011 25841472

ईमेल: director.ncipm@icar.gov.in

वेबसाइट: <https://ncipm.icar.gov.in>

Printed By: Alpha Printographics (India) # 9811199620